Publications
United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-1 ;Jan,Feb,& Mar),2026

"डिमांड ड्राफ्ट"-बदलते मूल्य और मां-बांप की तौहीन औकात की दास्तान-एक विश्लेषण

डि.रघुराम प्रसाद,
हिन्दी प्राध्यापक, सरकारी स्नातक महा विद्यालय, तिरुवूरु
चरवाणी सं.9182750027

DOI:10.37854/UIJMR.2026.3.1.61
Article Received:05-02-2026 **Article Modified:**03-03-2026
Article Accepted:04-03-2026 **Article Published:**05-03-2026

लेखिका का परिचय: मालती जोशी का जन्म सन 1934 को महाराष्ट्र के औरंगाबाद में हुआ | उनका पालन-पोषण इंदौर, मध्य प्रदेश में हुआ | उनकी स्कूली शिक्षा मालव कन्या महाविद्यालय से हुई | उसके बाद होल्कर (डॉ.भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय के) कॉलेज से स्नातक की पढाई पूरी की | सन 1956 में उसी विश्वविद्यालय से एम.ए हिन्दी की | हिन्दी और मराठी दोनों भाषाओँ में आपकी रचनाएँ मिलती हैं | आरंभ में आप कविताएँ लिखती थी | कालेज के दिनों में बहुत-सारे गीत लिखकर 'मालवा की मीरा (शिव मंगल सिंह सुमन द्वारा) की उपाधि पाई | उसके बाद कहानियाँ और उपन्यास लिखने लगी | उनकी पहली कहानी 'टूटने से जुड़ने तक' सन 1971 में धर्मयुग में छपी और काफी लोकप्रिय हुई | 'औरत एक रात है', रहिमन धागा प्रेम का, खूबसूरत झूठ उनकी सुन्दर कहानियाँ हैं | मानवीय संबंधों की जटिलता और यथार्थता की विरलता, भारतीय नारी की अस्मिता, महत्ता और विवेकपूर्ण संघर्ण उनकी कहानियों की विशेषतायें हैं | सहज, सरल और सवेदनशील भाषा से उन्होंने हिन्दी कथा-साहित्य को विशिष्ट बनाया | उनकी लगभग 50 कहानी संग्रह प्रकाशित हुए |

कहानी संग्रह: पाषाण युग, मध्यांतर, समर्पण का सुख, मन न हुए दस बीस, मालती जोशी की कहानियाँ, एक घर हो सपनों का, विश्वास गाथा, आखरी शर्त, मोरी रंग दे चुनरिया, एक सार्थक दिन आदि | बाल कहानी संग्रह: दादी की घड़ी, जीने की राह, परीक्षा और पुरस्कार, स्नेह के स्वर, सच्चा सिंगार उपन्यास: पटाक्षेप, सहचारिणी, शोभायात्रा, राग विराग गीत संग्रह: मेरा छोटा सा अपनापन संस्मरणात्मक

आत्मकथा: इस प्यार को क्या नाम दूं? मालती जोशी की कई कहानियाँ दूरदर्शन के लिए रूपांतरित व प्रसारित हुई | जया बच्चन से निर्मित 'सात फेरे' धारावाहिक उनकी कहानी पर आधारित थी | उनकी कहानी गुलज़ार से निर्मित किरदार में भी दिखाई गई | उनकी कई कहानियाँ मराठी, पंजाबी, उर्दू, बंगला, तमिल. तेलुगु, कन्नड, मलयालम, रूसी, जापानी और अंग्रेजी भाषाओँ में अनूदित हुई |

Publications
United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-1 ;Jan,Feb,& Mar),2026

सम्मान और पुरस्कार: मालती जी की साहित्यिक सेवाओं के लिए सन 2018 में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री पुरस्कार मिला | महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय का हिन्दी सेवी सम्मान (2018), मध्य प्रदेश सरकार का मैथिलीशरण गुप्त सम्मान (2017) शिखर सम्मान (2006), मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मलेन का भवभूति अलंकरण (1998), मध्य प्रदेश के राज्यपाल द्वारा अहिन्दी भाषी लेखिका के रूप में सम्मान (1985) दुष्यंत कुमार साधना सम्मान (2011) आदि मिले | मराठी पुस्तक पाषाण के लिए महाराष्ट्र शासन का पुरस्कार (1984), भारतीय भाषा परिषद कोलकाता का रचना पुरस्कार (1983) मिले | हाल ही में 15 मई 2024 को नई दिल्ली में उनका देहांत हुआ|

वैश्वीकरण के दौर में भारतीय परिवारों में बदलते संस्कार व विचार, पुराने और नए मूल्यों के बीच टकराव प्रस्तुत कहानी 'डिमांड ड्राफ्ट' का मूल विषय है | एक ही घर में साथ-साथ रहते तीन पीढीवालों के आचार-विचार और नैतिक मूल्यों में आकाश-पाताल का अंतर, माँ-बाप के लाड-प्यार से बच्चों का स्वेच्छाचार और जिद व दादागिरी, उनके दुर्व्यवहार से बडे-बुजुर्गों में उठती खिन्नता और दीनता, आत्मीय संबंधों का घोर व्यापारीकरण आदि का मार्मिक चित्रण लेखिका ने इसमें किया | एक बैंक कर्मचारिणी माँ अपने बेटे बॉबी के जन्म दिन पर काम से छुट्टी लेती है। बड़े मनोयोग से गुलाब जामुन बनाने लगती है | उसकी सास उससे पूछती है कि-'आज कुछ पर्व दिन है क्या? बदले में वह कहती है –आज आपके लाडले का जन्म दिन है | उसके लिए गुलाब जामुन और पुलाव मैं बना रही हूँ | आप दही के बड़े बनाइये, जो उसे बहुत पसंद हैं और वे केक का आर्डर भी देने गए | सास और बहू उस काम में लग जाती हैं तब तक ऊपर के कमरे में देर तक सोया बॉबी बिस्तर से उठकर सीधे अपनी दादी के पास चला आता है और सब को गुड मार्निंग कहता है | उसकी दादी उसे Happy Birthday कहती है और बदले में वह thank you कहता है | तब रसोईघर से उसकी माँ चिल्लाकर उससे कहती है 'अपनी दादी के पैर छूकर आशीर्वाद लो | वह अपनी माँ का आज्ञापालन करता है और दादी के कहे अनुसार अपनी माँ का आशीर्वाद लेने रसोईघर में घुसता है और वहाँ अपने पसंदीदे गुलाब जामुन देखकर आशीर्वाद की बात भूल जाता है और चाशनी में हाथ रखकर गुलाब जामुन निकाल लेता है और उसकी उजड्डता पर माँ उसे डांटती है | तभी वह एक कटोरे में चार गुलाब जामुन लेकर फटाफट खाने लगता है | दादी उससे कहना चाहती है –'बेटा गुलाब जामुन पहले ठाकुर जी को भोग लगाओ फिर खाओ' लेकिन जब तक यह बात बॉबी से वह कहती, तब तक गुलाब जामुन का एक हिस्सा उसके मुँह में चला जाता है |

यह सोचकर कि 'ठाकुर जी कौन-सा भोग खाते हैं ये तो ऐसे ही बालगोपालों के लिए ही बनते हैं और पहला कौर उनके मुँह में जाना ठीक ही है' वह चुप रह जाती है और पाँच सौ का एक नोट उसे देती है और अपनी मनपसंद चीज खरीदने को कहती है वह नोट लेकर अपनी दादी को thank you कहता है और अपनी माँ से यह बात चिल्ला-चिल्लाकर कहता है और उससे पूँछता है तुम और डैडी कितने रूपये दे रहे हो? बदले में उसकी माँ पूँछती है रूपये किसलिए? होटल जाना है

Publications
United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-1 ;Jan,Feb,& Mar),2026

क्या ? फिर वह उसे याद दिलाती है कि तुम्हारे डैडी दिल्ली से जॉकेट लाये थे जन्म दिन पर पहनने के लिए | अपनी माँ के सवालों का जवाब देते हुए वह कहता है-दोस्तों को चैनीस-खाना खाने को मन करता है | इसलिए 'रैस बाउल 'होटल जाने के लिए पैसे चाहिए | होटल जाते वक्त डैडी का दिया जॉकेट पहन लूँगा | तब उसकी माँ उससे कहती है-'चैनीस खाना चाहिए, तो दही बड़ों के बदले फ्राइड रैस या मंचूरिया या फिर चौमिन घर पर ही बना दूँगी | तब वह तपाक से कह देता है- "मैं कोई नर्सरी बच्चा थोड़े ही हूँ जो घर में खाऊँ | मैं सोलह साल का हो गया हूँ | "तो क्या हुआ? तुम्हारे पर लग गए क्या? उसकी माँ पूँछती है, तो वह रोब से कहता है- वह सब मैं नहीं जानता | मुझे शाम तक हर हालत में दो हज़ार रूपये चाहिए | यह बात अंतिम है" | उसकी बातों से उसकी माँ तैश में आ जाती है | उसकी दादी उन दोनों के बीच पड़कर बात को बढ़ाना नहीं चाहती है | इसलिए चुपचाप बाहर जाकर अखबार देखने लगती है | वह अपने समय की बातें याद करने लगती है | उसके दो बेटियाँ और एक बेटा (बॉबी का पिता) थे | वे कभी भी माँ-बाप से रूपयों के लिए न तो इस तरह दादागिरी करने की जुर्रत करते थे और न ही एक भी ऐसा प्रसंग याद है-जहाँ उनको दो सौ रूपये भी एक साथ दिए हो | कभी-कभार सिनेमा के पैसों के लिए लड़का उससे चिरौरी करता था | वह समय देखकर अपने पति से उनकी तरफदारी करती थी अगर वह मना करता, तो अपील की कोई गूंजाइश ही नहीं होती थी | लडकियाँ अपनी माँ के सिवा सहेलियों के साथ सिनेमा जाने का प्रश्न ही नहीं उठता था |

यही नहीं सबेरे छे बजे सब को बिस्तर से उठ जाना पड़ता था और त्योहार या छुट्टी के दिन आधा-पौने घंटे की छूट दी जाती थी और शाम को साढ़े सात बजे के अन्दर सबको घर लौटना पड़ता था | और अब बॉबी को साढ़े छे बजे स्कूल भेजने के लिए उसके माँ-बाप पाँच बजे से ही शुरू कर देते हैं | लेकिन वह अपनी मर्जी से उठता है | उसके उठते ही कोई गीज़र ऑन करता है, तो कोई उसके लिए दूध का गिलास लेकर आता है, तो कोई उसके जूते और बस्ता | सब की सेवा-सुश्रूषा के बदौलत वह सज-धजकर स्कूल के लिए ऐसा निकल पड़ता है जैसा कि किसी पर एहसान कर रहा हो | फिर शाम को सात बजे के बाद घर से निकल जाता है और लौटने का कोई ठिकाना नहीं | स्कूल के अलावा वह ट्यूशन भी जाता है जब कि उसके अपने बेटे को (बॉबी के पिता को) सिर्फ इंजीनियरिंग के समय कोचिंग लगवाई थी | आप नौकरी करके परिवार को सुचारू रूप से चलाती थी और अपनी पढाई मैट्रिक से आगे बढाई और बिए.बि.एड पास की | उसकी अपनी पढाई और नौकरी की वजह से घरेलू काम-काज का बोझ उसकी पढती बेटियों पर पड़ी | फिर भी बड़ी ने एम.ए और दूसरी ने एम.एस.सी पास की और उनकी शादी अच्छे घरानों में हुई | एक सुन्दर और सुशील बहू से अपने बेटे की शादी की | नौकरी लग जाने के बाद उसके बेटे ने उससे नौकरी छोड़ देने को कहा | मगर वह रिटायर होने तक काम करके बाद में अपने बेटे के यहाँ चैन की बंसी बजाने लगी | इस तरह वह अपनी पुरानी यादों में खोई हुई थी, इतने में उसकी बहू आफिस जाने के लिए तैयार होकर आती है और यह पूछने पर कि आज तो तुमने छुट्टी ली थी, वह उदास स्वर में कहती है छुट्टी लेकर क्या करना है जब घर में कुछ काम ही नहीं है कम से कम आफिस गई तो आधी

Publications
United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-1 ;Jan,Feb,& Mar),2026

छुट्टी बचेगी | 'आजकल माँ-बाप की हैसियत बच्चों की नज़रों में मात्र डिमांड ड्राफ्ट रह गई |' अपनी बहू की निराशापूर्ण और निर्लिप्त-बातें सुनकर वह उसे तसल्ली देती है और आप सोचने लग जाती 'क्या सचमुच माँ-बाप अपने बच्चों के लिए मात्र डिमांडड्राफ्ट हैं !

बॉबी: डिमांडड्राफ्ट कहानी का मुख्य पात्र है। वह आधुनिक, अनुशासनहीन, मनमौजी पीढी का प्रतिनिधि है। मां-बाप के लाड-प्यार से वह स्वच्छद आचरण का आदी हो जाता है। मनचाहे समय पर बिस्तर से उठता है। उसके मां-बाप गरम पानी, जूते, कपडे सब तैयार रखते हैं। तब वह नहा-धोकर, कपडे, जूते पहनकर, बस्ता उठाकर ऐसे रोबीले ढंग से स्कूल जाने निकलता है जैसे किसी पर एहसान कर रहा हो। मां-बाप का लाड-प्यार और दादी के दुलार के कारण वह अपनेआप को तीसमार खां समझने लगता है। बडों का मान, मां की ममता का ध्यान और उचित-अनुचित की पहचान उसमें नहीं है। अपने जन्मदिन के अवसर पर देर से उठकर सबको गुड मार्निंग कहते हुए रसोईघर में घुस जाता है। और मां को गुलाब जामुन बनाते देखकर सीधे कढाई में हाथ रखकर चार गुलाब जामुन ले लेता है मां की झिडकियों की परवाह किए बिना खाने लगता है। उसके बाद दादी के दिए पांच सौ रूपए लेकर उसे Thank You बोलता है और मां के डांटने पर दादी के पैर छूता है। उसके बाद शाम को दोस्तों के साथ चैनीस रेस्तरां जाने के लिए अपनी मां से दो हज़ार रूपये मांगता है और उसके समझाने पर कि तुम्हें जो चाहिए, वह घर में बना दूंगी, वह रोबीले स्वर से कहता है- 'मैं दूध पीता बच्चा नहीं हूं, जो कि घर में खाऊं' मुझे हर हालत में दो हज़ार रूपये चाहिए। इससे पता चलता है उसे जिद मनवाना ही सब कुछ है । न अपनी मां का मन रखने का लिहाज़ है और न ही फिज़ूल खर्च से बचने का। उसकी बेरूखी से निराश होकर उसकी मां उसके पसंदीदे दही बडे बनवाना छोड देती है और केक का आर्डर कैन्सिल कर देती है और अपनी छुट्टी वापस लेकर आफिस जाने लगती है।

बॉबी की दादी: यह डिमांडड्राफ्ट कहानी की सूत्रधार है । इसी के द्वारा आज्ञाकारी पुरानी पीढी और स्वेच्छाचारी नई पीढी का अंतर जाहिर होता है। इसके दो बेटियाँ और एक बेटा (बॉबी का पिता) थे | अपने बच्चों को इसने आनुशासन के साथ पाला । उन्हें अच्छी पढाई के साथ-साथ अच्छे संस्कार भी दिए।आप नौकरी करके परिवार को सुचारू रूप से चलाई और अपनी पढाई मैट्रिक से आगे बढाई और बिए.बि.एड पास की | अपनी बेटियों को भी खूब पढाया और घरेलू काम-काज में हाथ बंटाना भी सिखाया। योग्य वरों से उनकी शादी अच्छे घरानों में कराई |अपने बेटे को कोचिंग दिलाकर इंजीनियरिंग करवाई फल स्वरूप उसे अच्छी नौकरी मिली। एक सुन्दर और सुशील बहू से उसकी शादी की । आप सेवा निवृत्त होकर, पेंशन के सहारे, बेटे और बहू के आदर-सत्कार और सेवा-टहल में अपना शेष जीवन बिताने लगी। घर में अपना इकलौता पोता बॉबी के प्रति अपने बहू-बेटे का लाड-प्यार,बॉबी का स्वेच्छाचार, घरेलू रिवाज व बडों की भावनाओं का अनादर, रोबीली आवाज़ में दोस्तों को पार्टी देने दो हज़ार रूपयों के लिए हुंकार देखकर वह दातों तले उंगली दबाकर रह जाती है। बुजुर्गों का अनुल्लंघनीय आज्ञापालन करनेवाली अपनी संतान और अपनी मनमानी के आगे बुजुर्गों कुछ न माननेवाले बॉबी का स्वेच्छाचार बिलकुल उसकी समझ में

Publications
United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-1 ;Jan,Feb,& Mar),2026

नहीं आता है। इसीलिए मां के कहने पर आशीर्वाद लेने आये बॉबी को पांच सौ रूपयों देकर, बदले में उसका Thank You लेकर चुप रह जाती है । बॉबी की बेरूखी से मसोसकर, अपनी छुट्टी वापस लेकर आफिस जाने को तैयार बहू को समझा-बुझाती है। और मन में सोचती है आजकल बच्चों की नज़रों में महज़ डिमांडड्राफ्ट होकर रह गए!

बॉबी के मां-बाप: डिमांडड्राफ्ट कहानी के गौण पात्र हैं। ये अपनी आंखों का तारा बॉबी को अपने लाड-प्यार से बिगाड देते हैं। उसे हरदिन नींद से जागाने से लेकर, स्कूल भेजने तक उसकी सेवा-सुश्रूषा में लगे रहते हैं। फलस्वरूप वह अपने आप को तीस मार खां समझने लगता है। वह स्वेच्छाचारी होकर, घरेलू रिवाज़ और बुजुर्गों की भावनाओं का कद्र करना भूल जाताहै। अपने जन्मदिन पर जब वह दोस्तों को पार्टी के नाम पर दो हज़ार रूपये मांगता है तो उसकी मां मना नहीं करती है। दोस्तों को घर बुलाकर, मनचाहे पकवानों से पार्टी मनाने की उसकी बात की अवहेलना करता है तब भी वह मन मसोसकर रह जाती है मगर उसकी जिद पर रोक-थाम नहीं लगाती है। अपनी हैसियत उसकी नज़रों में महज डिमांडड्राफ्ट बना लेती है।

कथोपकथन: डिमांडड्राफ्ट कहानी के संवाद कथानक को रोचक और प्रभावोत्पादक बनाते हैं। मिसाल के तौर पर बॉबी को सबेरे-सबेरे नींद से उठाने व स्कूल भेजने का उपक्रम उसकी दादी के मुंह से लेखिका ने बहुत ही मजेदार तरीके से प्रस्तुत किया। "अब बॉबी का स्कूल सुबह साढे छे को है। पांच बजे से उसकी मां और पिता उसके सिराने, पैताने खडे होकर प्रभाती गाना शुरू कर देते हैं। उसके उठते ही जैसे घर में भूचाल आ जाता है। कोई गीज़र ऑन करता है, कोई उसके लिए दूध का गिलास लाता है तो कोई जूता सामने लाकर रखता है...सब चीजों से लैस हो करके वह इस ठाट से बाहर निकलता है जैसे सबके ऊपर एहसान कर रहा हो!" इसीतरह बॉबी के जन्मदिन पर बॉबी की दादी अपनी बहू से ..."अरे! आज तुम काम पर नहीं गई? ..बहू को गुलाब जामुन बनाते देखकर वह उससे पूछती है- "आज कुछ त्योहार है क्या?"

बॉबी की मां: "आज आपके लाडले का जन्मदिन है" बॉबी की दादी: हमारे Birthday Boy है कहां?" बॉबी की मां: सो रहे हैं अपने ही जन्मदिन की छुट्टी मना रहे है !" ... आगे चलकर वह बॉबी के खातिर बना रही पकवानों का ब्यौरा देती हुई अपनी सास से कहती है- "हां पुलाव बना रही हूं और ये केक का आर्डर देने गए हैं। अब दही-बडे आप बना देंगे, आपके हाथ के दही-बडे बॉबी को बहुत अच्छे लगते हैं ।" बॉबी: नींद से उठकर नीचे आते हुए- "Good Morning Everybody"

बॉबी की दादी: "Good Morning बेटे & Happy Birthday!

बॉबी: Thank You दादी मां! बॉबी की मां: "ये Thank You, Thank You क्या हैता है? दादी मां के पैर छूओ"। दादी के कहे अनुसार अपनी मां के आशीर्वाद लेने बॉबी रसोईघर में घुसता है और वहां गुलाबजामुन देखकर आशीर्वाद लेना भूलकर... "Yummy गुलाब जामुन my favourite"

Publications
United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-1 ;Jan,Feb,& Mar),2026

कहकर चाशनी में हाथ डालकर दो-चार ले लेता है। बॉबी की मां (डांटते हुए): ये क्या गंवारपन है? चमच लो, प्लेट लो। (मगर बॉबी मां की एक नहीं सुनता है) जब दादी आशीर्वाद लेने अपने पैर छुए बॉबी को पांच रूपये देती है, तब वह अपनी मां से चिल्लाकर कहता है- "Mummy! दादी मां has given me five hundred, आप कितने दे रहे हो और daddy? उसकी मां उसे याद दिलाती हुई कहती है- "अभी दिल्ली से लेदर जैकेट जो लाए थे, बताया नहीं था कि वह Birthday के लिए है?"

बॉबी: वह तो मैं शाम को पहननेवाला हूं, "What about hard cash?" बॉबी की मां: "Hard cash किसलिए?" बॉबी: "क्यों बिल का payment कैसे होगा? काउंटर पर वह लेदर जैकेट रखूंगा? बॉबी की मां- "काहे का बिल?" बॉबी: "होटल का।" बॉबी की मां- "होटल कौन जा रहा है?" बॉबी- "दोस्तों को चैनीस खाने का मन है, हम Rice Bowl जा रहे हैं. बॉबी की मां- "चैनीस खाने का मन है तो घर में नहीं बन सकता क्या? पुलाव बना रही थी..Fried Rice बना दूंगी, दही बडे cancel, मंचूरियन बना दूगी..।" बॉबी- "ओ मम्मी! I am not a nursery kid, घर में खाने के लिए, I am sixteen you know?" बॉबी की मां- "तो! Sixteen हो गए तो पर लग गए क्या?" बॉबी- "वो पर-वर मैं नहीं जानता, I want two thousand bucks in the evening and that is final!" बॉबी की इस दादागिरी से सकापकाई उसकी दादी अपने, अपने पति और बच्चों के आपसी संबंधों को याद करती हुई अपनेआप से कहती है- "मुझे तो कभी याद नहीं पडता कि मैं ने एकमुश्त दो सौ रूपये अपने बच्चों को दिए हो...इस तरह दादागिरी से मांगने की उनकी जुर्रत ही नहीं थी। कभी-कभार बेटा दोस्तों के साथ पिक्चर देखने जाता, तो मेरी चिरौरी करता। फिर मौका-मुनासिब देखकर उसके पिता के कानों में मैं यह बात डालती। अगर उनका मूड ठीक हुआ तो ठीक, नहीं तो, उस कोर्ट के आगे अपील का कोई प्रावधान ही नहीं था!" इसप्रकार बॉबी, उसकी मां और दादी के कथोपकथनों से पुरानी, मंझली और नई पीढी के सोच-विचार व संस्कारगत अंतर अच्छी तरह उभरकर सामने आता है। नई पीढी की मनमानी, दादागिरी उसे ठीक करने में अशक्त मंझली व पुरानी पीढी की लाचारी उजागर होती हैं। भाषा-शैली: डिमांडड्राफ्ट कहानी की भाषा सरल, सुबोध व अंग्रेजी मिश्रित है। पात्रोचित भाषा का प्रयोग हुआ। बॉबी की दादी और मां की भाषा देशी शब्द प्रधान थी। जैसे अपने सास के प्रश्न "आज कुछ त्योहार है क्या?"के उत्तर में बॉबी की मां कहती है- "आज आपके लाडले का जन्मदिन है।"

इसी प्रकार बॉबी की दादी रूपयों के लिए उसकी दादागिरी देखकर कहती है- "मुझे तो कभी याद नहीं पडता कि मैं ने एकमुश्त दो सौ रूपये अपने बच्चों को दिए हो...इस तरह दादागिरी से मांगने की उनकी जुर्रत ही नहीं थी।" जब कि बॉबी की भाषा उसके समय व उम्र के अनुरूप अंग्रेजी प्रधान थी। जैसे "Good Morning Everybody" "I want two thousand bucks in the evening and that is final!" उपरोक्त मिसालों से पता चलता है-डिमांडड्राफ्ट कहानी की भाषा सार्थक व प्रभावोत्पादक है । शीर्षक की सार्थकता-कहानी का शीर्षक "डिमांडड्राफ्ट" बिलकुल

Publications
United International Journal of Multidisciplinary Research (UIJMR)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
ISSN: 3048-6726 www.uijmr.in Impact Factor: 6.934 (SJIF) Vol-3,Issue-1 ;Jan,Feb,& Mar),2026

सार्थक है। सारी कहानी बॉबी की मनमानी और अपने जन्मदिन पर मां से दो हज़ार रूपये डिमांड करने के आर-पार घूमती है। बॉबी अपनी दादी के आशीर्वाद से ज्यादा उससे मिले पांच सौ रूपयों को महत्त्व देता है। अपने जन्मदिन पर आफिस के लिए छुट्टी रखकर, अपना मनपसंद पकवान बनाती मां की ममता की अवहेलना करता है। घर में ही अपने लिए और अपने दोस्तों के लिए चैनीस का खाना बनाने को तैयार मां की बात नहीं मानता है और उसकी स्वीकृति के बिना ही दोस्तो के साथ होटल जाने का प्रोग्राम बना लेता है। बिल चुकाने दो हज़ार रूपये डिमांड करता है। अपने मां-बाप को महज़ डिमांडड्राफ्ट बना देता है। इसप्रकार कहनी के लिए 'डिमांडड्राफ्ट' शीर्षक सार्थक सिद्ध हुआ।

कथा-स्रोत-गाथा श्रव्य-कथा.